संख्या-अनु0॥31-6/2000 301 /रा0

बिहार सरकार
राजभाषा विभाग

प्रेषक,

श्री डी0 एन0 चौधरी,
निदेशक ।

सेवा में,

सचिव,
राज्य निर्वाचन आयोग,
सोन भवन, तृतीय मंजिल,
वीरचन्द पटेल पथ मार्ग, पटना ।

पटना, दिनांक 30.3.07

विषय :- नगर पालिका आम चुनाव, 2007 : अभ्यर्थियों की सूची देवनागरी लिपि में वर्ण क्रमानुसार तैयार किए जाने के संबंध में ।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्रांक 273 दिनांक 22 मार्च 2007 के संदर्भ में कहना है कि आपके उक्त पत्र के साथ संलग्न हिन्दी वर्णक्रम में आवश्यक संशोधन कर दिया गया है । सुविधा के लिए अलग से हिन्दी वर्णानुक्रम संबंधित मार्गदर्शिका, जो विभागीय पदाधिकारियों द्वारा अपनी सुविधा के लिए बनाई गई है, संलग्न कर भेजी जा रही है ।

अनुलग्नक:- यथोपरि ।

विश्वासभाजन,

30/3/07

॥ डी0 एन0 चौधरी ॥
निदेशक ।

29.3.07

हिन्दी वर्णक्रम

1. **स्वर:**

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अ:

स्वर की मात्राएं:

ा ि ी ु ू े ै ो ौ ं :

2. **व्यंजन** - क ख ग घ ङ

"क्ष" यह वर्ण आधा क + ष का संयुक्त रुप है और वर्णानुक्रम में स्वर-मात्रा (औ) ौ अर्थात् "कौ" के बाद आएगा।

च वर्ग– च छ ज झ ञ

"ज्ञ" यह वर्ण आधा ज + ञ का संयुक्त रूप है और वर्णानुक्रम में स्वर मात्रा (औ) ौ अर्थात् "जौ" के बाद आएगा।

स्पष्टीकरण:- यदि पूर्व प्रचलित "भ" का भी प्रयोग हो तो अनुक्रम वही होगा।

ट वर्ग– ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़

यदि पूर्व प्रचलित "ण" का प्रयोग हो तो अनुक्रम वही होगा।

ट वर्ग में "ड" के बाद "ड़" आएगा जब "ड" पर स्वर मात्रा (औ) ौ अर्थात् "डौ" समाप्त हो जाए। तब "ड़" बाद "ढ" आएगा, इसी प्रकार "ढौ" के बाद ढ़ आएगा।

त वर्ग– त थ द ध न

"त्र" यह वर्ण आधा त + र का संयुक्त रूप है और वर्णानुक्रम में स्वरमात्रा (औ) ौ अर्थात् "तौ" के बाद आएगा।

प वर्ग– प फ ब भ म य र ल व श ष स ह

"श्र" यह वर्ण आधा श + र का संयुक्त रूप है और वर्णानुक्रम स्वरमात्रा (और) ौ अर्थात् "शौ" के बाद आएगा ।

3.	संयुक्त व्यंजन क्ष त्र ज्ञ श्र	इनका क्रम निर्धारण व्यंजन वाले स्तंभ में यथास्थान कर दिया गया है।
4.	स्वर "अं"	स्वर वर्ण एवं व्यंजन वर्ण यदि अनुस्वारयुक्त अथवा चंद्रबिन्दु युक्त हों तो अपने - अपने वर्ग में उनका स्थान पहला होगा। अनुस्वार (ं) और चंद्रबिन्दु (ँ) में क्रम का कोई भेद नहीं है। उदाहरण :- अंजनी, अंशुमाली, कंस, वंशीधर, हंसराज, चाँदनी।
5.	स्वर "अः" (विसर्ग)	विसर्ग जिस वर्ण में लगा हो वह वर्ण क्रम में पहले आएगा। जैसे :- दु:खहरण, दुखहरण इसमें दु:खहरण पहले आएगा।
6.	स्वर ऋ	यह स्वर स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने पर स्वर वर्ण वाले वर्ण में दीर्घ ऊ के बाद आएगा जैसे ऋषिशंकर, ऋषिदेव आदि ऊर्मिला के बाद आएगा तथा व्यंजन वर्ण में इसकी मात्रा (ृ) लगने पर इसका क्रम उपर जैसा ही रहेगा। जैसे :- कृपानंद, कृपाशंकर आदि। कूर्मराज, कूषमांड के बाद आएगा।
7.	हलन्त चिह्न (्)	हलन्त चिह्न जैसे (ड्) हलन्त चिह्न जिस वर्ण में लगेगा उस वर्ण से स्वर का लोप हो जाएगा, अर्थात् वह वर्ण आधा समझा जाएगा। उदाहरण :- ~~पूर्वाह्न~~ पूर्वाह्न, मध्याह्न । उपर्युक्त शब्द में "ह" वर्ण में स्वरमात्रा (औ) ौ के बाद हलयुक्त "ह" प्रयुक्त होगा।
8.	र के अन्य रूप	(i) रेफ - "र" का किसी वर्ण के पहले आने पर, मस्तकस्थ रूप में (र्) अर्थात् दर्प, धर्म, कर्म, ~~[illegible]~~ आदि में प वि म के पहले 'र' आधा माना जाएगा (ii) जिस वर्ण के नीचे 'र' लगे वह वर्ण आधा तथा 'र' पूरा समझना चाहिये। अर्थात् ध्रुव (ध्+रुव)। आधा [illegible] वर्ण के बाद ध्रुव आएगा [illegible] (iii) 'र' के तीसरे रूप के विषय में [illegible]

हिन्दी वर्णानुक्रम/वर्णक्रम मार्गदर्शिका

स्वर:

अँ, अं, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ (अनुस्वार और चंद्रबिन्दु में क्रम का भेद नहीं है, किन्तु विसर्ग लगा वर्ण पहले आएगा। जैसे: दुःखहरण, तब दुखहरण।)

व्यंजन:

क, क्ष, ख/ख़, ग/ग़, घ । च, छ, ज/ज़, ज्ञ, झ ।
ट, ठ, ड/ड़, ढ/ढ़, ण । त, त्र, थ, द, ध, न ।
प, फ/फ़, ब, भ, म । य, र, ल, व, श, श्र, ष, स, ह ।

उदाहरण: स्वर: अँ/अं, अः को अलग अक्षर नहीं माना गया। ये दोनो ध्वनियाँ 'अ' के पेटे में आएगी। वर्णानुक्रम में पूर्ण अक्षर से पहले अनुनासिक अनुस्वार-चिह्न ' ˇ , ' ' , युक्त वर्ण आएगा। जैसे- हँस, हंस, हस, हास, ह्रास, आदि। अतः अनुस्वार और विसर्ग वाले स्वर सामान्य स्वर के पहले रखे जाएँगे।
जैसे- अँ/अं, अः, अक, अख, अग, अघ, अच, अछ, अज, अझ, अट, अठ, अड, अढ़, अत, अथ, अद, अध, अन, अप, अफ, अब, अभ, अम, अय, अर, अल, अव, अश, अष, अस, अह।

व्यंजन: कँ/कं, कः, क, काँ, कां, का, कॉ, किं, कि, कीं, की, कुँ, कुं, कु, कूँ, कूं, कू, कृं, कृ, कें, के, कैं, कै, कों, को, कौं, कौ। उदाहरण: कंकड़ीला, कंकण, कंकत, कंकाल, कंगन, कंगूरा, कंचुकी, कंठ, कक्का, कक्षा, कलाकार, काँच, कांत, कालानुक्रम, कॉलेज, किताब, कीट, कुंचन, कुंडल, कुत्ता, कूंज, कूदना, कृंतक, कृपा, केंद्र, केला, कैंची, कैद, कोंपल, कोटि, कोढ़ा, कौतुक, कौशल, कौषेय, कौस्तुभ, क्यारी, क्यों, क्रंदन, क्रम, क्रांति, क्रिया, क्रीड़ा, क्रुद्ध, क्रूर, क्रेता, क्रोध, क्रौंच, क्लांति, क्लिष्ट, क्वण, क्वांरा, क्षण, क्षत्रिय, क्षमा, क्षय।

संयुक्ताक्षर:

(i) व्यंजन के इन पूर्ण अक्षरों में मात्रा लगने के बाद संयुक्त अक्षर अपने क्रम में होंगे, यानी आधे अक्षर पूर्ण अक्षरों के बाद आएँगे। इस तरह संयुक्ताक्षरों का वर्णानुक्रम उनके घटकों के क्रम से निर्धारित होता है। जैसे कवर्ग- 'कौ' के बाद आधे अक्षर/संयुक्ताक्षर : क्या, क्र इसके बाद में 'क्ष'। कर के बाद कर्कट, कौन के बाद क्या आदि।

(ii) क्क, क्ख, क्च, क्त, क्थ, क्न, क्प, क्फ, क्ब, क्भ, क्म, क्य, क्र, क्ल, क्व, क्श, क्ष, क्ष, क्स आदि।

क्ष, त्र, ज्ञ:- ये अक्षर संयुक्ताक्षर हैं, जैसे:

क्ष = क्+ष	त्र = त्+र
ज्ञ = ज्+ञ	श्र = श्+र
क्र = क्+र	द्व = द्+व

क्ष, त्र, ज्ञ:

ये कोई अलग वर्ण नहीं है, अतः इनका स्थान क्रमशः क, त और च वर्ग में होगा, न कि 'ह' के बाद। जैसे- त्तौल के बाद त्रिभुवन। तौहीन के बाद त्यक्त। कौशल्या के बाद क्षेमराज। करौली के बाद कर्क। जगमोहन के बाद ज्ञानी।

क-वर्ग:

क्ष यह वर्ण क+ष का संयुक्त रूप है और वर्णानुक्रम में [illegible] मात्रा 'औ' अर्थात् 'कौ' के बाद आएगा।

220

च-वर्ग: 'ञ', यह वर्ण ञ+ज का संयुक्त रूप है और वर्णानुक्रम में स्वर-मात्रा 'औ', अर्थात् 'जौ' के बाद आएगा। स्पष्टीकरण: यदि पूर्व-प्रचलित 'झ' का भी प्रयोग हो तो अनुक्रम वही होगा।

ट-वर्ग: 'ण', यदि पूर्व-प्रचलित 'रा' का प्रयोग हो तो अनुक्रम वही होगा। ट-वर्ग में 'ड' के बाद 'ड़' आएगा जब 'ड' पर स्वर मात्रा औ (ौ), अर्थात् डौ समाप्त हो जाए, तो 'डौ' के बाद 'ड़' आएगा।

त-वर्ग: 'त्र', यह वर्ण त+र का संयुक्त रूप है और वर्णानुक्रम में स्वर-मात्रा (ौ), अर्थात् तौ के बाद आएगा।

प एवं य वर्ग: 'प्य'- यह वर्ण प+य का संयुक्त रूप है और वर्णानुक्रम में स्वर-मात्रा (ौ), अर्थात् 'पौ' के बाद आएगा।
'श्र'- यह वर्ण श+र का संयुक्त रूप है और वर्णानुक्रम में स्वर-मात्रा (ौ), अर्थात् 'शौ' के बाद आएगा।
ऋ- यह स्वर स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने पर स्वर वर्ण में दीर्घ 'ऊ' के बाद आएगा। जैसे- 'ऋषिशंकर' 'ऊर्मिला' के बाद आएगा। व्यंजन वर्ण में इसकी मात्रा 'ृ' लगने पर इसका क्रम ऊपर जैसा ही रहेगा। जैसे 'कूर्मराज' के बाद 'कृपानंद', 'कृपाशंकर' आएगा।

हलन्त चिह्न(्): यह चिह्न जिस वर्ण में लगेगा, उस वर्ण में स्वर का लोप हो जाएगा अर्थात् वह वर्ण आधा समझा जाएगा। जैसे- पूर्वाह्न, मध्याह्न।

'र' के अन्य रूप: रेफ- ' र ' का किसी वर्ण के पहले आने पर शिरोरेखा के ऊपर स्थित रूप ' र्' ', अर्थात् 'र्क' होगा और इसका अनुक्रम भी वर्ण के अनुसार ही होगा। जैसे- कर्म, चर्म, दर्द, दर्प, धर्म, नर्म आदि।
जिस वर्ण के नीचे 'र' लगे, वह वर्ण आधा समझना चाहिए, जैसे-ध्रुव। इसलिए स्वतन्त्र वर्ण के बाद संयुक्त वर्ण का अनुक्रम होगा। जैसे धर्म के बाद ध्रुव।
'र' का तीसरा रूप ' ् ' र के ही समान है, परंतु आकार भिन्न है। जैसे- राष्ट्र, ट्राम, ड्रम, कृच्छ।

संक्षेपाक्षर में वर्णक्रम निर्धारण उपनाम के अनुसार किया जाएगा, जैसे के० के० तिवारी, इसमें तिवारी के अनुसार और सी० पी० ठाकुर में ठाकुर के अनुसार।

किसी नाम के आरंभ में यदि उपाधि या सम्मानसूचक शब्द अल्पाक्षर में हो, जैसे- डॉ०, प्रो०, प्रा० मु०, मो०, शे०, पं०, आ०, ज्ञा०, म० आदि हो तो वर्णक्रम में उसे छोड़कर उसके ठीक बाद वाले वर्ण के अनुसार वर्णानुक्रम निर्धारित होगा। परंतु नाम का प्रारम्भ ऐसे अल्पाक्षर में न होकर पूरा का पूरा हो, जैसे शेख, मुल्ला, महंथ, पंडित, हकीम, मौलवी, मुहम्मद, मोहम्मद, आचार्य एवं ज्ञानी आदि हो तो उन्हें नाम का ही हिस्सा समझा जाएगा।

ङ, ञ और ण से कोई शब्द आरम्भ नहीं होता है।
ढ वर्ण से शुरू होनेवाले शब्दों में ढ के नीचे बिन्दु नहीं लगता है, जैसे- ढाल। यदि वर्ण शब्द के बीच में आए तो ढ के नीचे बिंदु (ढ़) लगता है, जैसे- मेढ़क, बुढ़ापा आदि।

ध्यातव्य: किसी प्रकार का संदेह होने पर ज्ञानमंडल, काशी से प्रकाशित 'बृहद् हिन्दी कोश' एवं अन्य प्रामाणिक कोशों से सहायता ली जा सकती है।